हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की आवश्यकता एक अध्ययन

डॉ. अरूणा कुसुमाकर

प्रस्तावनाः

शिक्षा मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य होने के साथ–साथ वाछनीय लक्ष्यों की पूर्ति का एक उपयोगी साधन भी है।। वास्तव में शिक्षा एक ऐसा उपकरण है जो सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक विकास में अहम भूमिका अदा करती है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम के अनुसार ''शिक्षा वास्तविक अर्थो में सत्य है। यह ज्ञान और प्रकार की अतहीन यात्रा है। ऐसी यात्रा मानवतावाद के विकास के लिए नए रास्ते खोलती है।''

वर्तमान समय में सम्पूर्ण वातावरण में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा जगत भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं है। अतः वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में गुणत्ता की आवश्यकता अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्यः

1. उच्च शिक्षा का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों का अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की आवश्यकता का अध्ययन करना।
4. गुणवत्ता विस्तार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन विधिः प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः मौखिक साक्षात्कार एवं विचार विमर्श द्वारा प्राप्त तथ्यों से विश्लेषाण्त्मक पद्धति पर आधारित है।

विश्लेषणः उच्च शिक्षा से तात्पर्य मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों में चतुर्मुखी विकास से है।

श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन, आध्यात्मिक साधना, ब्रह्मचर्य और योग पर आधारित है। उनके अनुसार अन्तःकरण या मानस–शिक्षा का मुख्य अंग है। उन्होंने अन्तःकरण के चार स्तर बनाए हैं– चित्त, मानस, बुद्धि और ज्ञान उनका मत था कि मानव में इन शक्तियों का क्रमिक विकास होता है। अतः शिक्षा ऐसी होना चाहिए कि वह इन शक्तियों को विकसित कर सके। केवल ज्ञान की प्राप्ति ही शिक्षा नहीं है। वास्तविक शिक्षा वहीं है, जिसमें मानव का पूर्ण विकास करने की क्षमता हो।

वर्तमान समय में प्रचलित किताबी ज्ञान अथवा कक्षा तक सीमित बुद्धि व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास करने में असमर्थ है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियोंः

1. आधुनिक समय में शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है जिसके कारण शिक्षण संस्थाएँ व्यवसाय की तरह कार्य कर रही है।
2. उच्च शैक्षणिक सुविधाओं का विस्तार शहरी क्षेत्रों में अधिक हो रहा है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर की खाई बढ़ती जा रही है।

ISSN : 2582-9092

3. वैश्वीकरण के कारण विदेशी विश्वविद्यालय तेजी से हमारे देश में अपनी शाखाएँ खोल रहे है। अतः घरेलू विश्वविद्यालय के समक्ष कड़ी चुनौती है।
4. शिक्षा का निजीकरण एक और शैक्षणिक विकास की दुहाई देता है वही दूसरी ओर गुणवत्ता के संबंध में यह बड़ी चुनौती है।
5. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की समस्या भी बड़ी चुनौती है।
6. उच्च शिक्षा के समक्ष वैश्विक वातावरण के साथ समायोजन करना भी महत्वपूर्ण चुनौती है।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की आवश्यकताः उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त चुनौतियों से सामना करने के लिए तथा शिक्षा के वास्तविक अर्थ को चरितार्थ करने के लिए शिक्षा में गुणवत्ता का समावेश एवं विकास करना आवश्यक है।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता से आशय शिक्षा के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु समुचित क्रियाकलापों का निर्वहन करने से है।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षा क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं को शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप बदलना होगा।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निम्न क्षेत्रों में गुणवत्ता विकास की आवश्यकता हैः

∑ पाठ्यक्रम
∑ अध्ययन एवं अध्यापन के तरीके
∑ विद्यार्थियों के मूल्यांकन के तरीके
∑ अधोसंरचना एवं उनके उचित उपयोग की व्यवस्था
∑ विभिन्न गतिविधियों का संचालन
∑ प्रबंधन एवं प्रशासन के तौर तरीके
∑ नेतृत्व क्षमता
∑ नवाचारी योजनाओं का क्रियान्वयन
∑ अनुसंधान

गुणवत्ता विस्तार हेतु सुझावः

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता की नितान्त आवश्यकता है अतः उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के विस्तार हेतु कुछ प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैः

∑ शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान तक सीमित न होकर व्यक्तित्व विकास से संबंधित होना चाहिए। अतः विद्यार्थियों में लिखित एवं मौखिक संप्रेषण तथा संवाद क्षमता विकसित करने के प्रयास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनमें नेतृत्व क्षमता, टीम भावना से कार्य करना, समस्याओं के समाधान करने की क्षमता, संगठन क्षमता, कार्यक्रम आयोजन एवं संचालन की निपुणता आदि योग्याताओं को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

ISSN : 2582-9092

- ∑ उच्च शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों का चरित्र बल बढ़े, मानसिक बल बढ़े तथा बुद्धि का विकास हो।
- ∑ शिक्षा में स्वरोजगार की प्रेरणा को यथार्थ में समावेशित किया जाना चाहिए।
- ∑ उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का विकास करने के लिए सार्वजनिक व्यय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 8 प्रतिशत करना चाहिएक्र
- ∑ उच्च शिक्षा के सभी पाठ्यक्रमों पर पुनर्विचार कर वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार पाठ्यक्रमों का निर्धारण किया जाए।
- ∑ अध्ययन एवं अध्यापन के तरीकों में परिवर्तन कर उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग किया जाना चाहिए।
- ∑ अध्ययन अध्यापन का सही तरीकों से मूल्यांकन आवश्यक है। केवल पाठ्यक्रम पर आधारित लिखित एवं मौखिक परीक्षा को विद्यार्थी के मूल्यांकन का आधार न माना जाए वरन् अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तित्व विकास से संबंधित तरीकों से मूल्यांकन किया जाए।
- ∑ उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का समावेश करने के लिए अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ अन्य गतिविधियों का निरंतर संचालन किया जाना चाहिए।
- ∑ विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अध्यापन के साथ प्रबंधन तथा प्रशासन संबंधी तौर तरीकों का भी ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
- ∑ प्रत्येक संस्था को अपने स्तर पर विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता को विकसित करने के लिए प्रयास करने चाहिए।
- ∑ यह सत्य है कि नवीनता सबको अच्छी लगती है अतः अध्ययन–अध्यापन में नित्य नये नवप्रवर्त्तन करना चाहिए।
- ∑ उच्च शिक्षा में वास्तविक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास किए जाना चाहिए।

निष्कर्षः प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्च शिक्षा के समक्ष उनके चुनौतियों है किन्तु शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के चहुमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अतः उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का समावेश कर शिक्षा के मूल उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूचीः

1. कुरूक्षेत्र जनवरी 2010 ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. योजना सितंबर 2005 योजना भवन, नई दिल्ली।
3. नई दुनिया दैनिक समाचार पत्र, इन्दौर।
4. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्रबंधन वर्ष 2011–12 उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल।
5. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत जी.एस.डी. त्यागी एवं पी.डी. पाठक विनोद पुस्तक मंदिर– आगरा।

प्राध्यापक
शासकीय संस्कृत–महाविद्यालय, इन्दौर